

रविवार 16 मई, 2021

विषय — नश्वर और अमर

स्वर्ण पाठ: रोमियो 6 : 23

"परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 116 : 1, 2, 6-9

- 1 मैं प्रेम रखता हूं, इसलिये कि यहोवा ने मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है।
- 2 उसने जो मेरी ओर कान लगाया है, इसलिये मैं जीवन भर उसको पुकारा करूंगा।
- 6 यहोवा भोलों की रक्षा करता है; जब मैं बलहीन हो गया था, उसने मेरा उद्धार किया।
- 7 हे मेरे प्राण तू अपने विश्राम स्थान में लौट आ; क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है॥
- 8 तू ने तो मेरे प्राण को मृत्यु से, मेरी आंख को आंसू बहाने से, और मेरे पांव को ठोकर खाने से बचाया है।
- 9 मैं जीवित रहते हुए, अपने को यहोवा के साम्हने जान कर नित चलता रहूंगा।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 23: 1-6

- 1 यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।
- 2 वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है;
- 3 वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।
- 4 चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥
- 5 तू मेरे सताने वालों के साम्हने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।
- 6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा॥

2. यूहन्ना 3 : 1-12

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 1 फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
- 2 उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की आरे से गुरू हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।
- 3 यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।
- 4 नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दुसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?
- 5 यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
- 6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
- 7 अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।
- 8 हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।
- 9 नीकुदेमुस ने उस को उत्तर दिया; कि ये बातें क्योंकर हो सकती हैं?
- 10 यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्त्राएलियों का गुरू हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?
- 11 मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उस की गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।
- 12 जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं, तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे?

3. 1 यूहन्ना 5 : 5, 11, 13, 20

- 5 संसार पर जय पाने वाला कौन है केवल वह जिस का यह विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।
- 11 और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है।
- 13 मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।
- 20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

4. 1 तीमुथियुस 1: 12 (मैं)-17 (से 1st.)

- 12 और मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिस ने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं; कि उस ने मुझे विश्वास योग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया।
- 13 मैं तो पहिले निन्दा करने वाला, और सताने वाला, और अन्धेरे करने वाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे, ये काम किए थे।
- 14 और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ।
- 15 यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूं।
- 16 पर मुझ पर इसलिये दया हुई, कि मुझ सब से बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे, उन के लिये मैं एक आदर्श बनूं।
- 17 अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे।
आमीन॥

5. 1 कुरिन्थियों 15: 50-57

- 50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
- 51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
- 52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे।
- 53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
- 54 और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।
- 55 हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?
- 56 हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है।
- 57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।

6. प्रकाशित वाक्य 21 : 2

- 2 फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।

7. प्रकाशित वाक्य 22 : 1, 2, 14

- 1 फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मंमने के सिंहासन से निकल कर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी।
- 2 और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ था: उस में बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।
- 14 धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे।

8. प्रकाशित वाक्य 2 : 7

- 7 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 42 : 26 (मैं)-28

ईसाई विज्ञान में सच्चा मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित है - अच्छाई से, बुराई से नहीं - और इसलिए वह नश्वर नहीं बल्कि अमर है।

2. 434 : 31 (परमेश्वर)-32

परमेश्वर ने मनुष्य को केवल आत्मा के लिए अमर और उत्तरदायी बनाया।

3. 246 : 27-31

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है। आइए फिर हम उम्र और तुषार के बजाय अपने अस्तित्व के विचारों को प्रेम, ताजगी और निरंतरता में आकार दें।

4. 295 : 5-15

भगवान मनुष्य सहित ब्रह्मांड का निर्माण और संचालन करता है। ब्रह्मांड आध्यात्मिक विचारों से भरा है, जिसे वह विकसित करता है, और वे मन के आज्ञाकारी हैं जो उन्हें बनाता है। नश्वर मन आध्यात्मिक को भौतिक में बदल देगा, और फिर इस त्रुटि की नश्वरता से बचने के लिए मनुष्य के मूल स्व को पुनर्प्राप्त करेगा। ईश्वर की स्वयं की छवि में बनाए गए नश्वर अमर की तरह नहीं हैं; लेकिन अनंत आत्मा सभी होने के नाते, नश्वर चेतना वैज्ञानिक तथ्य

के लिए अंतिम पैदावार होगी और गायब हो जाएगी, और सही, और हमेशा के लिए होने का वास्तविक अर्थ प्रकट होगा।

5. 81 : 17-18, 25-30

भगवान की समानता में मनुष्य के रूप में विज्ञान में पता चला अमर होने में मदद नहीं कर सकता। ... यद्यपि भौतिक अर्थों से उत्पन्न होने वाली अन्तः क्रिया विज्ञान के सामंजस्य को छिपाती है, लेकिन धार्मिकता विज्ञान के दिव्य सिद्धांत को नष्ट नहीं कर सकती। विज्ञान में, मनुष्य की अमरता भगवान के अच्छे होने पर निर्भर करती है, और अच्छे की अमरता के एक आवश्यक परिणाम के रूप में अनुसरण करती है।

6. 476 : 1-5, 10-20, 28-32

नश्वर अमर के नकली हैं। दिव्य विज्ञान में, ईश्वर और वास्तविक मनुष्य दिव्य सिद्धांत और विचार के रूप में अविभाज्य हैं। दिव्य विज्ञान में, ईश्वर और वास्तविक मनुष्य ईश्वरीय सिद्धांत और विचार के रूप में अविभाज्य हैं।

इसलिए मनुष्य न तो नश्वर है और न ही भौतिक। नश्वर गायब हो जाएंगे, और अमर होंगे, या भगवान की संतान, मनुष्य के एकमात्र और अनन्त सत्य के रूप में दिखाई देंगे। मुर्दा भगवान के बच्चे नहीं हैं। उनके पास कभी भी पूर्ण राज्य नहीं था, जिसे बाद में फिर से हासिल किया जा सकता है। वे नश्वर इतिहास की शुरुआत से थे, "पाप में कल्पना की और अधर्म में माता के गर्भ में लाया।" मृत्यु दर अंततः अमरता में निगल जाती है। पाप, बीमारी, और मृत्यु को उन तथ्यों को जगह देनी होगी जो अमर आदमी के हैं।

जब यीशु ने परमेश्वर के बच्चों की बात की, न कि पुरुषों के बच्चों की, तो उन्होंने कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है;" इसका मतलब है, सत्य और प्रेम वास्तविक मनुष्य में राज्य करता है, यह दर्शाता है कि भगवान की छवि में आदमी बेदाग और शाश्वत है।

7. 296 : 4-13

प्रगति अनुभव से पैदा होती है। यह नश्वर मनुष्य का पकना है, जिसके माध्यम से नश्वर को अमर के लिए गिरा दिया जाता है। या तो यहां या उसके बाद, पीड़ित या विज्ञान को जीवन और मन के बारे में सभी भ्रमों को नष्ट करना होगा, और भौतिक भावना और स्वयं को पुनः उत्पन्न करना होगा। अपने कर्मों के साथ पुरानी मानवता को बंद करना होगा। कामुक या पापी कुछ भी अमर नहीं है। एक झूठी भौतिक भावना और पाप की मृत्यु, कार्बनिक पदार्थों की मृत्यु नहीं है, जो मनुष्य और जीवन, सामंजस्यपूर्ण, वास्तविक और शाश्वत को प्रकट करती है।

8. 435 : 12 (अच्छा)-14

... अच्छे कर्म अमर होते हैं, दुःख के बदले आनन्द, दुख के बदले सुख और मृत्यु के बदले जीवन।

9. 190 : 14-20

मानव जन्म, वृद्धि, परिपक्वता, और क्षय के रूप में घास से वसंत के रूप में सुंदर हरे रंग के ब्लेड के साथ होते हैं, बाद में मुरझा जाते हैं और अपनी मूल शून्य पर लौट आते हैं। यह नश्वर लगने वाला लौकिक है; यह कभी भी अमर होने में विलीन नहीं होता है, लेकिन अंत में गायब हो जाता है, और अमर आदमी, आध्यात्मिक और शाश्वत, वास्तविक आदमी पाया जाता है।

10. 496 : 20-27

"मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है," — नश्वर विश्वास के कानून, अमर जीवन के तथ्यों के साथ युद्ध पर, यहां तक कि आध्यात्मिक कानून जो कब्र को कहते हैं, "तुम्हारी जीत कहाँ है?" परंतु "जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।"

11. 428 : 22-29

महान आध्यात्मिक तथ्य को सामने लाना चाहिए कि मनुष्य है, पूर्ण और अमर नहीं। हमें हमेशा अस्तित्व की चेतना को धारण करना चाहिए, और जल्द ही या बाद में, मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से, हमें पाप और मृत्यु पर नियंत्रण रखना चाहिए। मनुष्य की अमरता के प्रमाण अधिक स्पष्ट हो जाएंगे, क्योंकि भौतिक विश्वासों को छोड़ दिया जाता है और होने के अमर तथ्यों को स्वीकार किया जाता है।

12. 76 : 22-31

पाप रहित आनन्द, - जीवन की पूर्ण सद्भाव और अमरता, एक दिव्य सुख या पीड़ा के बिना असीमित दिव्य सौंदर्य और अच्छाई का होना, - एकमात्र सत्य, अविनाशी पुरुष का निर्माण करता है, जिसका अस्तित्व आध्यात्मिक है। अस्तित्व की यह स्थिति वैज्ञानिक और अक्षुण्ण है, - एक पूर्णता केवल उन लोगों द्वारा समझ में आती है जिनके पास दिव्य विज्ञान में मसीह की अंतिम समझ है। मृत्यु कभी अस्तित्व की इस स्थिति को जल्दबाजी नहीं कर सकती, क्योंकि अमरता प्रकट होने से पहले मृत्यु को दूर करना होगा, प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

13. 495 : 14-24

जब बीमारी या पाप का भ्रम आपको झकझोरता है, ईश्वर और उसके विचार के प्रति दृढ़ रहना अपने विचार में पालन करने के लिए उसकी समानता के अलावा कुछ भी अनुमति न दें। न तो डर और न ही संदेह को अपनी स्पष्ट

भावना और शांत विश्वास का पालन करें, कि जीवन के सामंजस्यपूर्ण जीवन की मान्यता - जैसा कि जीवन है - किसी भी दर्दनाक भावना, या विश्वास को नष्ट कर सकता है, जो जीवन नहीं है। क्रिश्चियन साइंस, कॉरपोरल सेंस के बजाय अपनी होने की समझ का समर्थन करें, और यह समझ सच्चाई के साथ त्रुटि को दबा देगी, मृत्यु दर को अमरता से बदल देगी, और सद्भाव के साथ चुप्पी को दूर करेगी।

14. 288 : 27-28

विज्ञान अमर मानव की गौरवशाली संभावनाओं को प्रकट करता है, नश्वर इंद्रियों द्वारा हमेशा के लिए असीमित।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने,

परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6